International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

इस्लाम के विकास तथा इसके धार्मिक व सांस्कृतिक स्वरूप का विश्लेषण : पैगम्बर से अबासिद वंश तक

अमित कुमार सिंह

Assistant Professor, DSCW, Ferozepur, Punjab, India.

मनदीप कौर

MA, History.(Second Year).Dev Samaj College for Women, Ferozepur, Punjab, India.

शोध संक्षेप

इस्लाम एक धर्म के रूप में वर्तमान में सर्वाधिक चर्चित है क्यों कि इस्लाम में कट्टरवाद के प्रवेश ने इसे विवादास्पद बना रखा है. इस्लाम ने जगत को अनेक नियामते बख्शी हैं और सभ्यता तथा संस्कृति के विकास में अभूतपूर्व योगदान भी दिया है. विश्व में गणित, विज्ञान व सामाजिक नियम विकसित करने में इस्लाम की भूमिका जहाँ सराहनीय है वहीँ इस्लाम के चारो तरफ भ्रमो के किस्से भी खूब व्याप्त रहे हैं. विश्व की दो तिहाई आबादी के पास इस्लाम के समुचित विशेषताओं का ज्ञान नहीं है और इसे बहुत ही सीमित नजरिये से देखा जाता रहा है. मेरे इस शोध पत्र का उद्देश्य है इस्लाम की यात्रा को स्पस्ट करते हुए उसके क्रमशः विकास को उजागर करना साथ ही साथ इस्लाम धर्म व संस्कृति के उन प्रमुख विशेषताओं को भी प्रकाशित करना जिन्हें जानना आवश्यक ही नहीं वरन अपरिहार्य भी है.

मुख्य शब्द- पैगबर, खलीफा, उस्मान, अली, कुरआन

भूमिका

इस्लाम विश्व के प्रमुख धर्मो में से एक है. इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है समर्पण, इस्लाम का उदय मक्का में हुआ और इसके प्रवर्तक मुहम्मद साहब कुरैशी जनजाति से सम्बंधित थे. उनका जन्म 570 ई. में मक्का में हुआ. मक्का में उन दिनों कबीलाई संस्कृति का प्रचलन था. उनके पिता अब्दुल्ला कि मौत उनके जन्म के पूर्व ही हो गयी थी. जब वह 6 साल के थे तो उनकी माता अमीना का भी देहांत हो गया. उनका पालन काबिले के स्वामी उनके चाचा अबू तालिब ने किया.बचपन में ही अनाथ हो जाने के कारण मुहम्मद साहब की औपचारिक शिक्षा दीक्षा न हो सकी थी और वे चरवाहे के तौर पर कबीले को अपनी सेवाएं प्रदान करने लगे. वे नित्य अपनी कुछ मवेशियों को गारे-हारा की पहाड़ियों की तरफ चराने के जाया करते और इसकी एक बहुत बड़ी लेकिन आरामदेह गुफा में विश्राम करते.

मुहम्मद साहब – इस्लाम के प्रवर्तक

मुहम्मद साहब का पूरा नाम था *हजरत मुहम्मद सल्ली अल्ला हु अलैहे वसल्लम*, इनका बचपन बेहद गरीबी में बीता और बचपन में ये बकरियां चराते थे . 25 साल की अवस्था में उनका विवाह एक 40 साल की धनी विधवा खदीजा से हुआ . विवाह के बाद आप आध्यात्मिक साधना में पूरी तरह प्रवृत रहने लगे और किम्वदंतियों के अनुसार 40 साल की अवस्था में देवदूत जिब्राईल ने उन्हें नबी (सिद्ध पुरुष) और रसूल (देवदूत) घोषित कर दिया. इस घटना को इस्लाम में इलहाम की संज्ञा दी जाती है. इलहाम तथा इसके बाद

उन्होंने मक्का में प्रचलित मूर्तिपूजा का विरोध करना शुरू किया क्यों कि मुहम्मद साहब ने घोषित किया कि इस्लाम का आधार है एकेश्वर वाद .

3 साल इस्लाम का गुप्त प्रचार करने के बाद मुहम्मद को दिव्य सत्ता द्वारा इस्लाम का खुला प्रचार करने का आदेश मिला और साथ ही साथ उनका विरोध बढने लगा . उनके प्रमुख विरोधी वही कुरैशी थे जिनके न्यस्त स्वार्थ को मुहम्मद साहब आहत कर रहे थे. मक्का पर कुरैश कबीले का अधिकार था और जिनकी आजीविका उन 360 मूर्तियों से चलती थी जिनकी पूजा का मुहम्मद विरोध कर रहे थे. कुरैशी मुहम्मद साहब के जान के दुश्मन बन बैठे. इन्ही संघर्षों के बीच मुहम्मद साहब की पत्नी व चाचा का देहांत 619 ई. में हो गया.

मुहम्मद साहब के चाचा जनाब अबुतालिब ने कभी इस्लाम काबुल नहीं किया लेकिन वे अपने काबिले को संरक्षण देते रहे थे . कबीले के नए प्रधान अबू जहल ने काबिले का संरक्षण भी देना बंद कर दिया . जब मुहम्मद कि हालत एक समाज बहिष्कृत जैसी हो गयी तो उनके 622 ई. से मदीने से आमंत्रण मिला और वो मदीना चले गये. इस घटना को हिजरत कहा गया है. इस वर्ष से मुस्लिम हिजरी संवत प्रारंभ हुआ.मदीने में ही कुरआन शरीफ की रचना हुई. उन्होंने शिक्षा दी कि अल्लाह एक है और मुहम्मद उसके पैगम्बर हैं "या अलाह इल अल्लाह , या मुहम्मद रसूल अल्लाह". इस्लाम के अनुयायियों को पांच कर्तव्य पुरे करने होते थे – पांच बार नमाज पढना , रोजा – व्रत , हज – तीर्थयात्रा , जकात – धार्मिक कर देना , कलमा . मुसलमानों से 3 प्रकार के कर लिए गये सदका – इच्छा से दिया जाने वाला कर , जकात – धार्मिक कर जो धनी मुसलमानों की आय से 2.5 % लिया जाता था , उस्र – उत्पन्न उपज का 1/10 भाग और अगर सिंचाई हुई हो तो 1/20 भाग.

कुरआन को केंद्र में रख कर मुहम्मद ने मदीना में इस्लाम के राज्य की स्थापना की. वह पहले मुस्लिम शासक थे. कुरआन के कुछ बेहद अहम् सिद्धांतों के अनुपालन पर पैगम्बर जोर देने लगे. प्रमुख सिद्धांत थे मिल्लत अर्थात सुन्नियों में भाईचारे व एकता की भावना , फतवा अर्थात जब कोई शरियत का पालन नहीं करता है तो उसके खिलाफ फतवा जारी किया जाता है , जबाबित अर्थात कुरआन का धार्मिक कानून , कुरआन के अनुसार यह स्पस्ट कहा गया कि वास्तविक शासक खुदा है.

इस्लाम की स्थापना के लिए संघर्ष

पैगम्बर द्वारा मक्का से मदीना आना एक युगान्तरकारी घटना थी लेकिन इससे मदीना निवासी कुरैशियों का पैगम्बर व उनके द्वारा स्थापित नव-निर्मित धर्म का विरोध बढ़ता ही गया. इस्लाम के प्रसार का सीधा सा अर्थ था कुरैशियों द्वारा आत्मघात. इस्लाम को नष्ट करने के उद्देश्य से कुरैशियों ने मदीना पर तीन आक्रमण किए , पहला आक्रमण था बद्रा का युद्ध जो मार्च- अप्रैल 624 ईसवी में किया गया. दुसरा आक्रमण कहा जाता है उहूद का युद्ध जो मार्च 625 ईसवी को हुआ ,तीसरा युद्ध था डिच का युद्ध जो मार्च अप्रैल 627 ईसवी को किया गया, इन तीनो युद्धों में मुहम्मद को ऐतिहासिक जीत हासिल हुई , वे कुरैश कबीले के भी शासक बन गये. इस्लाम को लगभग समूचे अरब में प्रसारित करने से पूर्व ही लगभग 63 वर्ष की आयु में 632 ई. में पैगम्बर ने यह नश्वर शरीर त्याग दिया. विडंबना यह भी थी कि मुहम्मद साहब ने अपना कोई धार्मिक व राजनैतिक उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था !

उत्तराधिकार व खिलाफत

खलीफा का अर्थ होता है 'प्रतिनिधि' . धरती पर खुदा का प्रतिनिधि खलीफा कहलाता है. खलीफा मुहम्मद साहब के बाद इस्लामी शासक बने. वे अपने अधिकारों में तबतक निरंकुश थे जबतक वे इस्लामी कानूनों व परम्पराओं का पालन करते रहते लेकिन अगर वे इस्लाम के नियमो से विमुख होते तो जनता को उनके खिलाफ आन्दोलन करने का अधिकार था. इस लिहाज से इस्लामी राजव्यवस्था में हम लोकतान्त्रिक मूल्य पहले से अन्तर्निहित पाते हैं. इस्लाम में राजनीति और उत्तराधिकार को पार्याप्त महत्व नहीं दिया गया है. धर्म शासन प्रमुख है . मुहम्मद के बाद मदीना वासियों ने अपना शासक स्वयं चुनने का निर्णय किया और अबुबक्र को अपना खलीफा चुना . मुहम्मद की मौत के 100 वर्षों के अन्दर ही मुसलमानों ने दो शक्तिशाली साम्राज्यों ससानिद और बिजेंटायिन को हरा दिया और सीरिया, इरान व ईराक को जीत लिया. इतने बड़े साम्राज्य को सम्हालने के लिए खलीफाओं को अपनी राजधानी दमिश्क बनानी पड़ी

इस्लाम के चार खलीफाओ ने इसका खूब प्रसार किया और इस्लाम के विरोधियों का सम्पूर्ण दमन करने की नीति अपनाई.पहले खलीफा हुए अबुबक्र (632-634 ई.) सम्पूर्ण अरब देश को जितने के लिए उन्होंने 11 सैनिक दलों का गठन किया और 1 साल में पुरे अरब को जीत लिया . फिर उन्होंने ईराक, सीरिया, को विजित किया . मृत्यु के पहले उन्होंने उमर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया . उमर (634 – 644 ईसवी) ने आमिर – उल- मुमीनिन का विरुद धारण किया . इन्होने ससानिद और मिश्र को इस्लामी राज्य में मिला लिया . इन्होने जमींन का बंदोबस्त व जनगणना भी कराई. उस्मान (644 – 656 ईसवी) 70 वर्ष की आयु में खलीफा नियुक्त हुए . इनके समय में इस्लाम में पतनशीलता आ गयी थी. इनपर पक्षपात का आरोप लगा और इन्होने जनता का सम्मान खो दिया . इनकी हत्या कुरआन पढ़ते हुए कर दी गयी. अली ने कुफा को अपनी राजधानी बनाया . इनके काल में इस्लाम का पतन अपने शिखर पर था . इनकी मौत के बाद इनके बड़े बेटे हसन खलीफा चुने गये किन्तु मुआविया के लिए उन्होंने यह पद त्याग दिया और मदीना चले गये . मुआविया ने खिलाफत को बादशाहत का स्वरूप दिया जिससे इस्लाम का धार्मिक नेतृत्व क्षीण हो गया . मुआविया ने यजीद को अपना उत्तराधिकारी बनाया किन्तु कुफा की जनता ने उसे पसंद नहीं किया और मुहम्मद के पुत्री फातिमा की बेटी के बेटे हुसैन को खलीफा बनने के लिए आमंत्रित किया . हुसैन और यजीद के बीच युद्ध ज़रूरी हो गया . करबला के मैदान में दोनों में युद्ध हुआ और हुसैन शहीद हो गये . यजीद ने 3 साल शासन किया . यजीद के बेटे की टीवी से मौत हो गयी तो लोगों ने हकम को अगला खलीफा चुना . मुआविया के वंश को उमय्या वंश कहा जाता था

उमय्या वंश (661 – 750 ई.)

कुरैश दो शाखाओं में बंटे थे – उमय्या और हाशमी . उमय्या शाही थे और हाशमी पर अत्याचार किया जाता था . उमय्या वंश में कुल 14 शासक हुए जो लगभग 90 वर्ष तक शासन में कायम रहे . उमय्या कुशल शासक तो हुए लेकिन बाद में उनमे बुराइयाँ व्याप्त होने लगीं . निरंकुशता और अतिकेन्द्रित शासन व्यवस्था से राज्य में विद्रोह होने लगे . उमैया वंश के पतन के बाद अब्बासी वंश की स्थापना हुई.

अब्बासी वंश

इनका शासन सबसे लम्बा रहा है . इस वंश के 33 शासकों ने 500 वर्षों तक शासन किया इसके पहले आठ खलीफा हैं- अबुल अब्बास स्फ्फाह , अबू जाफर मंसूर, महदी, हादी, हारून रशीद, अमीन, मामून, मोतसिम.

अब्बासी खलीफाओं ने बगदाद को अपनी राजधानी बनाया , इन्होने इरानी व शियाओं का सहयोग लिया . इस शासन काल की दो सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियां थीं उच्च पदों पर अरबों का एकाधिकार समाप्त तथा धर्म निरपेक्ष संस्कृतियों की विभिन्न शाखाओं का विकास . हारून के समय में राजकीय वैभव का सबसे अधिक विकास हुआ . हारून के समय में ही इमाम अबू युसूफ ने सरकार के सिद्धांत बनाए . ये सिद्धांत किताब उल खिराज में संकलित हैं जो जमीन और कर की एक नियमावली है . सिंद हिन्द नामक ग्रन्थ का अनुवाद किया गया जो मूलतः ब्रह्म सिद्धांत था . मोतसिम के साथ उसके वंश और राष्ट्र का गौरव भी समाप्त हो गया.

निष्कर्ष

इस्लाम का उत्कर्ष एक सच्चे धर्म के तौर पर अरब में हुआ. कालांतर में इस्लाम ने राजनैतिक अधिकार भी हासिल किए जो कहीं न कहीं अस्तित्व के युद्ध में इसकी विवशता ही थी. इस्लाम ने धर्म के गहन तत्वों के साथ राजनीति तथा सामजिक व सांस्कृतिक उत्कर्ष की भूमिका का भी सृजन किया और एक समय ऐसा भी इसके इतिहास में आया कि समूचे मध्य एशिया पर इस्लामी परचम लहराने लगा. इस्लाम के विकास और उत्कर्ष की गाथा एक युग के सृजन का प्रतिनिधित्व करती है जिसमे वैज्ञानिकता के साथ –साथ यथार्थ का भी समावेश है. आज इस्लाम के साथ जो विडम्बनाए जुड़ रही हैं, स्पष्ट है सच्चे इस्लाम से इनका कोई लेना देना नहीं है. सच्चा इस्लाम मानवता, प्रेम व भातृत्व के मूल्यों का सदा से पोषक रहा है.

REFERENCES

1. Ali, Syed Ameer. *The Spirit of Islam: A History of the Evolution and Ideals of Islam, with a Life of the Prophet*. London: Chatto & Windus, 1978.
2. Armstrong, Karen. *Islam: A Short History*. New York: Modern Library, revised ed., 2002.
3. Awde, Nicholas, trans. and ed. *Women in Islam: An Anthology from the Qur'an and Hadīths.* New York: Palgrave Macmillan, 2000.
4. Bloom, Jonathan and Sheila Blair. *Islam: A Thousand Years of Faith and Power*. New Haven, CT: Yale University Press, 2002.
5. Bowker, John. *What Muslims Believe*. Oxford, UK: Onewworld, 1999.
6. Cook, Michael. *The Koran: A Very Short Introduction.* Oxford, UK: Oxford University Press, 2000.
7. Daniel, Norman. *Islam and the West: The Making of an Image*. Oxford, England: Oneworld, 2000 (reprinted).
8. Denny, Frederick Mathewson. *An Introduction to Islam*. New York: Macmillan, 1994.
9. Elias, Jamal J. *Islam.* Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall, 1999.
10. Endress, Gerhard. *Islam: An Historical Introduction*. New York: Columbia University Press, 2nd ed., 2002.